8. दक्षिणी गंगा गोदावरी

कवि - काका कालेलकर

I उन्मुखीकरण प्रश्न :

प्र.1. यहाँ पर किसके बारे में बताया गया है?

उ. प्रस्तुत कविता में नदियों के बारे में बताया गया है।

प्र.2. दक्षिण भारत की कुछ नदियों के नाम बताइए।

उ. कृष्णा, गोदावरी, तुंगभद्रा, पेन्ना, कावेरी, पंपा आदि दक्षिण भरत की प्रमुख नदियाँ हैं।

प्र.३. गोदावरी नदी के बारे में आप क्या जानते है?

उ. गोदावरी दक्षिण मध्य भारत की नदी है। यह भारत की दूसरी लंबी नदी है। इसकी लंबाई लगभग 1465 कि.मी. है। इसका उद्‌गम स्थान महाराष्ट्र के नासिक जिले के त्रैयंबक के पास स्थित है। इसे दक्षिणी गंगा नाम से भी पुकारते हैं।

II. लेखक परिचय :

काका कालेलकर का पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर है। उनका जन्म दिसंबर 1885 ई.को महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ और मृत्यु 1991 में हुई। इन्होंने आजीवन गांधीवादी विचारधारा का पालन किया। इन्होंने हिंदुस्तानी प्रचार सभा,वर्धा के माध्यम से हिंदी की खूब सेवा की। इन्होंने कहा था - राष्ट्रभाषा प्रचार हमारा एक राष्ट्रीय

कार्यक्रम है। इनकी प्रमुख रचनाएँ स्मरण यात्रा, धर्मोदय, लोकमाता,हिमालयनों प्रकाश आदि है। वे राज्य सभा के सदस्य भी रह चुके थे।

III. शब्दार्थ :

1. अधिष्ठात्री	=	माता (देवी)	2. तट	=	किनारा
3. वर्णन	=	बखान	4. छटा	=	शोभा
5. नहर = नदी या जलाशय से निकाल गया			6. कतार	=	क्रम
7. उधेड़-बुन	=	उलझन	8. शान-शौकत	=	ठाट-बाट
9. नज़र	=	दृष्टि	10. साँवला	=	श्यामवर्ण
11. मटमैला	=	मिट्टी जैसा मैला (गंदा)	12. झाँई	=	छाया
13. स्निग्ध	=	प्रकाश	14. धौल	=	सफेद
15. घाट	=	नाव से उतरने का स्थान	16. भँवर	=	जल कुंभ
17. स्वाँग	=	दूसरों की तरह अभिनय करना	18. टापु	=	द्वीप
			19. धवल	=	सफेद
20. उँडेलना	=	डालना	21. संभ्रम	=	क्षुब्ध (उत्साह उमंग)
22. कुदरत	=	ईश्वरी शक्ति (प्रकृति)	23. काँस=		एक-प्रकार की घास

IV. प्रश्नोत्तर :

प्र.1. सूर्योदय के समय प्रकृति का वातावरण कैसा दिखाई देता है?

उ. सूर्योदय के समय प्राकृतिक सौंदर्य देखने लायक होता है। प्रकृति में विविध छटावाली हरियाली दिखाई पडती है। सूर्योदय के समय रंग बिरंगे बादलों वाला आसमान नहाने के लिए उतरता हुआ दिखाई पडता है। सवेरे ठंडी-ठंडी बहने वाली हवा मन को पुलकित करती है।

प्र.2. लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा कि राजमहेंद्री के आगे गोदावरी की शान शौकत निराली है?

उ. पश्चिम की तरफ पहाडों की श्रेणियाँ है। पहाडों पर घिरे हुए बादलों से सूरज की धूप कही नामो निशान तक नहीं था। बादलों का रंग साँवला होने के कारण गोदावरीकी झाँई और गहरी हो रही थी। पानी के ऊपर का दश्य पानी में प्रतिबिंबित हो रहा था। इससे सुंदरता बढ़ रही थी। पहाडों पर छाए बादल ऋषि मुणियों जैसे लग रहे थे। इसलिए लेखक ने कहा होगा कि राजमहेंद्री के आगे गोदावरी की शान शौकत निराली है।

प्र.3. लेखक ने भँवरों को बच्चों की उपमा क्यों दी होगी?

उ. बच्चे अपनी माता की गोद में मनमाना नाचते, खेलते, उछलते और कूदते है पड़ती और थोड़ी उसी बहती धारा में भँवरे अपनी माता गोदावरी की गोद में कुछ देर दिखती ही देर में भयानक तूफान का स्वाँग रचाती और एक ही पल में खिल खिलाकर हँसती है।

प्र.4. गोदावरी नदी के टापुओं की क्या विशेषताएँ हो सकती हैं?

उ. गोदावरी के टापू प्रसिद्ध हैं। कई तो पुराने धर्म की तरह जहाँ के तहाँ स्थिर रूप होकर जमे हुए है और कई एक कवि की प्रतिभा की तरह क्षण-क्षण भर में स्थल की नवीनता उत्पन्न करते और नया-नया रूप ग्रहण करते हैं।

प्र.5. लेखक ने रेल के पहियों की आवाज़ को 'संक्रामक' कहा है। 'संक्रामक' से लेखक का क्या आशय होगा?

उ. संक्रामक का अर्थ होता है, जो स्पर्श या संसर्ग से फैलता है। रेल जब पुल पर चलती है तब पहियों की आवाज़ बहुत बढ़ती है। उससे अगर हम नफरत न करते हुए पसंद करे तो रेल के पहियों का ताल भी आकर्षक लगता है। जिसका नाद संक्रामक रोग की तरह दूर-दूर तक फैलता जाता है। इसलिए लेखक ने रेल के पहियों की आवाज को 'संक्रामक' कहा।

प्र.6. गोदावरी को धीर-गंभीर माता की संज्ञा क्यों दी गयी होगो?

उ. कोई भी सरिता सरित्पति से मिलते समय त्वरित, उत्तेजित और उत्सुक होती है। लेकिन गोदावरी माता की चाल तो ऐसी नहीं है। वह तो दृढ़ शांत मन से, मंद गति से उदात्त रूप में अपने सरित्पति से मिलती है। इसलिए गोदावरी को धीर-गंभीर माता की संज्ञा दी गई होगी।

V. अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया

अ. प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र.1. लेखक को गोदावरी का जल कैसा लगा होगा?

उ.लेखक को गोदावरी का जल अत्यंत पवित्र लगा है क्यों कि लोग गांगा जल के आधे कलश गोदावरी में उँडेलते और फिर गोदावरी के जल से कलश भर कर ले जाते हैं। इसके जल का से

वन राम-लक्ष्मण और सीता से लेकर बूढ़े जटायु बडे-बडेतत्व ज्ञानी, साधु-संत ने भी किया है। गोदावरी चारों वर्णों की माता और अधिष्ठात्री देवी मानी जाती है इसलिए लेखक को गोदावरी का जल अत्यंत पवित्र लगा। इसकेजल में अमोघ शक्ति है आर पानी की एक बूँद का सेवन भी व्यर्थ नहीं जाता।

प्र.2. लेखक की जगह तुम होते, तो गोदावरी नदी का वर्णन कैसे करते? बताइए।

उ. गोदावरी एक पवित्र और सुंदर नदी है। यह एक जीव नदी है। इसे दक्षिण गंगा भी कहते हैं। इसका जन्मस्थान महाराष्ट्र के नासिक जिले के त्रैयंबक के पास माना जाता है। यह एक विशाल नदी हैं।लेखक को गोदावरी का जल अत्यंत पवित्र लगा क्यों कि इसके जल में अमोघ शक्ति हैं। इसके तट पर अनेक शूरवीर, तत्वज्ञानी, साधुसंत, राजनीतिज्ञ भी पैदा हुए हैं। गोदावरी नदी अन्नपूर्णा है।क्यों कि इसके द्वाराकई लाखों एकड़ की भूमि सिंचाई की जाती है।

आ. पाठ के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर हाँ या नहीं में दीजिए।

1. लेखक को कोव्वुरू स्टेशन पार करने के बाद गोदावरी मैया के दर्शन हुए। (हा)
2. गोदावरी की शान-शौकत कुछ निराली है। (हाँ)
3. उपासक गंगा जल के आधे कलश को गोदावरी में उँडेलते हैं। (हाँ)
4. राजमहेंद्री और धवलेश्वर का सुखी जन-समाज दुखित था। (नहीं)

इ. गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

.... टेक्स्ट बुक पेज नं. 54 ....

प्र.1. विनोबाजी के जीवन का प्रमुख कार्य क्या था?

उ. भूदान आंदोलन विनोबाजी का प्रमुख कार्य था।

प्र.2. बनारस की सभा में गाँधीजी ने क्या कहा?

उ. बनारस की सभा में गाँधीजी ने कहा था, ''जब तक देश परतंत्र है, तब तक देश गरीब है, ठाट-बाट से रहना पाप है। जब तक देश की जनता दुखी है, आराम से रहना अपराध है।

प्र.3. रेखांकित शब्द का वचन बदलकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

उ. सेवा - सेवाएँ

वाक्य : मदरतेरिसा की सेवाएँ स्मरणीय है।

4. इस गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

उ. इस गद्यांश का उचित शीर्षक ''आचार्य विनोबा भावे के सुविचार''।

ई. इस अवतरण के मुख्य शब्द पहचानकर लिखिए।

.... टेक्स्ट बुक पेज नं. 55 ....

पुल, उधेड़-बुन, भागमती, विशालपाट, दर्शन, गर्व शानशौकत, निराली।

VI अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता

अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

प्र.1. किसी यात्रा का वर्णन करते हुए अपने अनुभवों को प्रस्तुत कीजिए।

उ.

यात्राओं का जीवन में बडा महत्व है। मैं अपने मित्रों के साथ दिल्ली की यात्रा की। हम दिल्ली में एक होटल में ठहरे। आराम किया अगले दिन हमने दिल्ली के प्रसिध्दस्थानों

को देखा। सबसे पहले हम दक्षिण दिल्ली में स्थित पृथ्वीराज चौहान के सयमका कुतुबमीनार देखा। कुतुबमीनार भारतीय भवन निर्माण कला का अनुपम नमूनाहै।

इसके बाद निजामुद्दीन के पास हुमायूं का मकबरा देखा। बाद में लोटसटेंपुल, जंतर-मंतर, अक्षरधाम आदि स्थान देखे। यह भ्रमण हमारे लिए मनोरंजक और ज्ञानवर्धक सिध्द हुआ। ये सब देखने से भारत के अतीत वैभव तथा उसकी प्रगति का ज्ञान हुआ।

प्र.2. आंध्र को अन्नपूर्णा एवं भारत का धान्यागार कहलाने में नदियों का योगदान व्यक्त कीजिए।

उ. आंध्र प्रदेश में कृष्णा, तुंगभद्रा, पेन्ना, मंजिरा वंशधारा आदि नदियाँ बहती हैं। इन नदियों पर कई बाँध बनाये गये हैं। इन से लाखों एकड़ भूमि की सिंचाई होती है और हज़ारों मेगावाट बिजली का उत्पादन भी होता ह। करोड़ों लोगों को पेयजल मिलता है। इसलिए आंध्रप्रदेश को अन्नपूर्णा एवं भारत का धान्यागार कहते हैं।

आ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

प्र.1. चेन्नई से राजमहेंद्री जाते समय लेखक की भावनाएँ कैसी थी?

उ. चेन्नई से राजमहेन्द्री जाते समय वहाँ के प्रकृति सौन्दर्य को देख कर लेखक के हृदय में अनेक भावनाएं थी। बेजवाडें से आगे सूर्योदय का दृश्य, वर्षा ऋतु के चलते चारो तरफ हरियाली पैली थो। नहर के किनारे से गुजरती रेल पटरी पर आगे बढ़ती रेल से अनोखा दृश्य दिख रहा था, जगह-जगह छोटे तालाब उनमें खिले कमल दल और बगुलों का समूह साथ ही ठंडी हवा का स्वर्श इस सुबह को अभिनंदन करने के लिए मचल रहा था। राजमहेन्द्री के आगे गोदावरी की शान, शोभा कुछ निराली लगी।पश्चिमी ओर की पहाडियाँ उस पर छाए श्वेत धुले जैसे बादल ऋषिमुनियों जैसे लगे।गोदावरी के टापू और वहाँ

स्थित मन्दिरों के घंटानाद ह्रदयनाद की पूर्व स्मृति करा रहे थी। पूर्व की ओर गोदावरी का पाट कुछ अधिक चौडा था। उसके सुदूर पर वन श्रोकी शोभा निराली थी। उन्होंने गोदावरी के तट पर अत्यन्त सुख की अनुभूति करते हुए कहा कि गोदावरी के जल में अमोघ शक्ति है उसके एक बूँद जल का पान भी व्यर्थ नही जाता। ऐसी पावन यह दक्षिण की गंगा गोदावरी है।

प्र.2. लेखक ने गोदावरी को माता की संज्ञा क्यों दी होगी?

उ. गोदावरी सचमुच माता के समान है। क्यों कि वह हमारी आवश्यकताएँ पूरी कर रही है। राम-लक्ष्मण और सीता से लेकर बूढ़े जटायु तक सबको अपना स्तन्य-पान कराया है। इसके तट पर शूरवीर भी पैदा हुए हैं और बड़े-बड़े तत्व ज्ञानी भी, साधु-संतभी जन्मे, धुरंधर राजनीतिज्ञ भी और ईश्वर भक्त भी। चारों वर्णों की वह माता है। हमारे पूर्वजों की गोदावरी अधिष्ठात्री देवी है। इसके जल में अमोघ शक्ति है और पानी की एक बूँद का सेवन भी व्यर्थ नहीं जाता।

इ. अपने द्वारा की गयी किसी यात्रा का वर्णन करते हुए मित्र के नाम पत्र लिखिए।

हैदराबाद,

दिनांक : 27-10-2014

प्रिय मित्र,

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा करता हूँ कि तुम भी वहाँ कुशल हो। पिछले सप्ताह हमारी कक्षा के छात्र विज्ञान यात्रा पर नागार्जुन सागर गये थे। हमारे साथ दो अध्यापक भी आये। पहले हम रेल से रवाना हुए। वहाँ पहुँचने के बाद एक होटल में ठहरें। दूसरे दिन नागार्जुन सागर बाँध देखने निकल पडे।

नागार्जुन सागर बाँध देश में सबसे बड़ा बाँध है। आचार्य नागार्जुन के नाम परयह बाँध का नाम रखा गया। प्राचीन काल में यहाँ आचार्य नागार्जुन विद्यापीठ बनाकर विद्यार्थियों को विज्ञान की शिक्षा दी थी। यह बाँध कृष्णानदी पर बनाया गया। पंडित. जवाहरलाल नेहरू ने इसकी नीवं डाली। इस बाँध के दोनों तरफ दो नहरें है। एक हैजवहर नहर, दूसरा लालबहादूर नहर। इस के जल से लगभग ३१ लाख एकड भूमि की सिंचाई होती है।

हमारी यात्रा सफल और विज्ञानदायक रही है। तुम अपने द्वारा की गयी किसी यात्रा का वर्णन अगले पत्र में लिखो। तुम्हारे माता-पिता को मेरा प्रणाम और छोटे भाईको प्यार।
तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में,

तुम्हारा मित्र,

अ.ब.क।

पता :

नाम : क.ख.ग,

घ.न : 14-85,

भवानी नगर, वरंगल।.

ई. इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक का कौनसा अनुभव आपको अच्छा लगा? क्यों?

उ. इस यात्रा वृतांत में लेखक के अनुभव अच्छे लगे। उनमें से एक अनुभव मुझे बहुत अच्छा लगा जो निम्नांकित है -

पश्चिम की तरफ नज़र फैलाई तो दूर-दूर तक पहाड़ियों की श्रेणियाँ नज़र आई। आसमान में बादल घिरे रहने से सूरज की धूप का कही नामोनिशान तक न था। बादलों का रंग साँवला होने के कारण गोदावरी के धूलि-धूसरित मटमैलजल की झाँई और भी गहरी हो रही थी। ऊपर की और नीचे की झाँई के कारण इस सारे दृश्य पर वैदिक प्रभाव की शीतल और स्निग्ध सुंदरता छाई हुई थी। और पहाड़ीपर कुछ उतरे हुए (धौले-धौले) बादल तो बिलकुल ऋषि मुनियों जैसे लगते थे। यहाँ प्रकृति सौंदर्य का वर्णन अनोखा है। लेखक की कल्पना शक्ति अद्‌वितीय है। यही आध्यात्मिक अनुभव मेरे दिल को छू लिया।

VII. भाषा की बात :

अ. सूचना पढ़िए। वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. बरसात, सरिता, पहाड़, मनुष्य (वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए।)

बरसात : वर्षा, बारिश, पावस

(बरसात के मौसम में चारो ओर हरियाली छा जाती है।)

सरिता : नदी, निर्झरिणी, तटिनी

(पहाड़ों से सरिता निकलकर आगे बढ़ती है और अंत में सागर में विलीन हो जाती है।)

पहाड़ : पर्वत, गिरि,शैल

पहाडों से कई नदियाँ निकलतीहैं।

मनुष्य : मानव, नर, इन्सान, आदमी, व्यक्ति

(मनुष्य जिज्ञासु है।)

2. **विजय, प्रसिध्द, दुर्लभ, पुराना (विलोम शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)**

विजय × पराजय

हर पराजय विजय का मार्ग दिखाती है।

प्रसिध्द × अप्रसिध्द

मनुष्य अच्छे व्यवहार से प्रसिध्द और बुरे व्यवहार से अप्रसिध्द होते हैं।

दुर्लभ × सुलभ

जंगल का रास्ता दुर्लभ है। इसलिए गाँव पँहुचना सुलभ न हो सका।

पुराना × नया

पुराना घर मरम्मत से नया हो गया।

3. **नहर, तितली, कविता, लहर (वचन बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)**

नहर - नहरें

नागार्जुन सागर से दो नहरे निकली हैं।

तितली - तितलियाँ

तितलियाँ फूलों पर मंडरा रही हैं।

कविता - कविताएँ

पंत ने प्रकृतिसे सम्बन्धित अनेक कविताएँ लिखी हैं।

लहर - लहरें

तूफान के समय समुद्र में ऊँची लहरे उठती हैं।

आ. सूचना - पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. सूर्योदय, उन्माद, पवित्र, अत्यंत (संधि विच्छेद कीजिए।)

सूर्योदय - सूर्य + उदय - गुण संधि (स्वर संधि)

उन्माद - उत् + माद - व्यंजन संधि

पवित्र - पौ + इत्र - अयादि संधि (स्वर संधि)

अत्यंत - अति + अंत - यण संधि (स्वर संधि)

2. **साधु - संत, चरणचिह्न, गंगाजल (समास बताइए)**

साधु-संत - साधु और संत - द्वंद्व समास

चरणचिह्न - चरणो के चिह्न - तत्पुरुष समास

गंगाजल - गंगा का जल - तत्पुरुष समास

इ. इन्हें समझिए ।

1. **नदी के पानी म उन्माद था, उसमें लहरें न थीं।**

के - संबंध कारक

में - अधिकरण कारक

उसमे - सर्वनाम (नदी के पानी के लिए)

2. **गोदावरी के प्रवाह केसाथ होड़ करते हुए भी उसे संकोच न होता था।**

के - संबंध कारक

केसाथ - संबंध बोधक

उसे - सर्वनाम

ई.   नीचे दिये गये क्रिया शब्द समझिए और अकर्मक व सकर्मक क्रियाएँ पहचानिए।

सोना, पढ़ना, पीना, हँसना, कहना, उठना, दौड़ना, खाना, चलना, लिखना

अकर्मक	सकर्मक
सोना	पढ़ना
हँसना	पीना
उठना	कहना
दौड़ना	खाना
चलना	लिखना

अपने स्कूल को एक उपहार (उपवाचक)

- ऋतु भूषण

प्र.1. राजु को उसका पुराना स्कूल कैसा लगता था?

उ. राजु को उसका पुराना स्कूल बहुत अच्छा लगता था। राजु की टांगे बहुत पलती और दुबल थी। अतः वह ज्यादा देर तक खडा नहीं रह पाता था पर उसके पुराने स्कूल में कभी किसीने उसकी कमजोरी की ओर ध्यान नहीं दिया। वह एक मेधावी छात्र था। वह हमेशा कक्षा में प्रथम आता था। हर विषय में सबसे आगे रहता था। पुराने स्कूल में उसके बहुत सारे मित्र थे और सभी अध्यापक उसे बहुत पसंद करते थे। अपने पुराने स्कूल के प्रति राजु का विचार था कि यदि स्वर्ग में भी स्कूल हो तो,वे भी उसके पुराने स्कूल से ज्यादा अच्छे तो नहीं हो सकते।

प्र.2. राजु के प्रति नये स्कूल के साथियों का व्यवहार कैसा था?

उ. राजु के प्रति नये स्कूल के साथियों का व्यवहार ठीक नहीं था। वह नए स्कूल में प्रवेश करने लगा तो सभी लोग ने उसकी टांगों की ओर संकेत करके हँसते हुए उसका मज़ाक भी उडाया। जब पहला पीरियड शुरू हुआ तो अध्यापक ने उसे कक्षा में सब से पीछे बिठा दिया। जब राजु से उसका परिचय पूछा गया तो उसने बताया कि वह एक गाँव के स्कूल से आया है। इस पर छात्रों को हँसी आयी। हर दिन उसके लिए ऐसा ही रहा। उसका कोई मित्र भी नहीं बन पाया था। वह खेलने भी नहीं जाता था। नए स्कूल के साथी जान गए थे कि राजु एक गवार लड़का है और उसे अपने गाँव के स्कूल का बडा 'घमंड' है।

प्र.3. राजु ने अपने स्कूल को किस तरह उपहार समर्पित किया?

उ. राजु ने अपनी स्थिति से निबटने के लिए बड़ी चतुराई से एक योजना बनाई।

कक्षा में अध्यापक कोई प्रश्न पूछे तो अपना हाथ उठाना बंद कर दिया। वार्षिक परीक्षामें अच्छे अंक पाने के लिए अधिक परिश्रम करने का निश्चय किया। वह साबित करना चाहता था कि गाँव का स्कूल कोई मूर्खों का स्वर्ग नहीं था। सब लड़कोने सोचा कि राजु फेल होगा। राजु ने घर में खूब पढ़ाई की ओर वार्षिक परीक्षाओं में बहुत अच्छा लिखा। जब परीक्षा फल आया तब वह कक्षा में प्रथम आया था। प्रथम आने पर राजु बहुत खुश हुआ। अब उसे लगा कि उसने अपने पुराने स्कूल को सुंदर और समुचित उपहार समर्पित किया।